safbin
For Small Farmers Future

## वर्षा आधारित क्षेत्र में अनुकूलित खेती पर प्रयोग

# दशपर्णी अर्क

- गोमूत्र – १० ली.
- गोबर– २ कि. ग्रा.
- पानी– २० ली.
- नीम की पत्ती– ५ कि. ग्रा.
- धतुरा की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- पपीता की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- अमरुद की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- करेला की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- कनेर की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- बेशरम की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- अरंडी की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- गेंदा की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- सिताफल की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- सदा सुहागन की पत्ती– २ कि. ग्रा.
- मदार की पत्ती–२ कि. ग्रा.
- अकऊआ की पत्ती–२ कि.ग्रा.

## बनाने की विधी

- स्थानीय वनस्पितयों में से उपलब्धता के अनुसार उपरोक्त १० पत्तीयों को अच्छी तरह से कूट कर पीस लें और गोमूत्र एवं गोबर के साथ मटके में मिलाकर सूती कपड़े से मटके के मुंह को ढक कर १५– २० दिन छांव में छोड़ दें।
- घोल को प्रतिदिन सुबह शाम सीधी दिशा में घुमाऐं।

## उपयोग

२० ली. घोल को १५० ली. पानी में प्रति एकड़ की दर से मिलाकर छिड़काव करें।

## लाभ

- सभी प्रकार के हानिकारक कीट–पतंगो से फसल को सुरक्षित रखता हैं।
- इसके उपयोग से खेतों में रहने वाले मित्र कीट और जीव जन्तुओ की रक्षा होती हैं।

Co-Financed by
European Union
Caritas Austria

"This document has been produced with the financial assistance of European Union. The contents of this document are the sole responsibility of the SAFBIN project partners and under no circumstances be regarded as reflecting the position of the European Union"

Implemented by
Caritas INDIA
The Joy of Service...

Associate Partners
AFPRO
Action For Food Production

CARITAS INDIA, CBCI CENTRE, 1 ASHOK PLACE, NEW DELHI 110001
Website: www.safbin.org, Email: sacu@safbin.org

© Caritas India® 2015